Ef – पापपूर्ण जीवन जीने वाली एक महिला द्वारा यीशु का
अभिषेक किया गया लूका ७:३६-५० | 1

– Save This Page as a PDF–

पापपूर्ण जीवन जीने वाली एक महिला द्वारा यीशु का अभिषेक किया गया

लूका ७:३६-५०

खोदाई: यह महिला एक फरीसी के घर आकर क्या जोखिम उठा रही थी? यह आपको उसकी भावनात्मक स्थिति के बारे में क्या बताता है? शमौन के बारे में आपकी क्या राय है? आपके अनुसार वचन ४१-४३ में दृष्टान्त बताने में येशुआ का उद्देश्य क्या था? उसने शमौन पर पर्याप्त प्रेम न करने का आरोप क्यों नहीं लगाया? यह आपको यीशु के बारे में क्या बताता है? वह इस महिला में क्या देखता है जो शमौन नहीं देखता? इसका उसके प्रति मसीहा के कार्यों पर क्या प्रभाव पड़ता है? इस परिच्छेद में, यीशु की मुख्य चिंता क्या प्रतीत होती है? शमौन की चिंता?

चिंतन: मसीह के साथ संबंध में प्रदर्शनकारी होना आपके लिए कितना कठिन है? आपको अपने प्यार के साथ अधिक खुला होने में क्या बाधा आती है? जब रिश्तों की बात आती है, तो क्या आप “बड़े माफ करने वाले” हैं या “कंजूस?” क्यों? इसका ईश्वर के साथ आपके रिश्ते से क्या संबंध है? इस कहानी से आपने क्या सीखा जिसे आप इस सप्ताह लागू कर सकते हैं? क्या यीशु की तरह आपके भी ऐसे मित्र हैं जो पापी हैं? क्यों? क्यों नहीं?

सुसमाचार ऐसी कहानियों से भरे हुए हैं जो अमीर और गरीब, घमंडी और विनम्र के बीच अंतर करती हैं। पापिनी स्त्री के साथ येशुआ की मुठभेड़ में, उसके और एक फरीसी के बीच विरोधाभास है, जिसके पूर्वाग्रहों ने उसे मसीह के प्रेम के प्रति अंधा कर दिया था। सटीक स्थान का खुलासा नहीं किया गया है.

अपने दूसरे मिशनरी अभियान पर गलील में कहीं, शमौन नाम के फरीसियों में से एक ने यीशु को अपने साथ रात का खाना खाने के लिए आमंत्रित किया (लूका ७:३६ ए)। इस शमौन को बेथनी में ठीक हुए कोढ़ी के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए, जो क्रूस पर चढ़ने से कुछ दिन पहले येशुआ का मनोरंजन करेगा (देखें Kb – बेथनी में यीशु का अभिषेक)। न ही पापिनी स्त्री को मैरी मैग्डलीन के साथ भ्रमित होना चाहिए। ऐसा संबंध बनाने का बिल्कुल कोई कारण नहीं है। वास्तव में, यदि हम बाइबल को अंकित मूल्य पर लेते हैं, तो हमारे पास अन्यथा सोचने का हर कारण है।

चूंकि लूका ने पहली बार लूका ८:१-३ में एक बिल्कुल अलग संदर्भ में मैरी मैग्डलीन का नाम लेकर परिचय दिया है, और केवल दो छंदों के बाद उसने यीशु के पैरों के अभिषेक

के बारे में अपनी कहानी समाप्त की, यह अत्यधिक संभावना नहीं लगती है कि मैरी मैग्डलीन वही महिला हो सकती है जिसका लूका ने वर्णन किया लेकिन पिछले विवरण में उसका नाम नहीं लिया। लूका इतना सावधान इतिहासकार था कि उसने इस तरह के महत्वपूर्ण विवरण की उपेक्षा की।

हालाँकि फरीसियों ने यीशु पर मौखिक ब्यबस्था तोड़ने का आरोप लगाने के तरीकों की तलाश शुरू कर दी थी (देखें Ei – मौखिक ब्यबस्था), लेकिन उस समय उनके प्रति उनकी शत्रुता पूर्ण घृणा में विकसित नहीं हुई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि शमौन विशिष्ट रूप से घमंडी था, वास्तव में एक विशिष्ट फरीसी था (देखें Co – यीशु ने एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को माफ करता है और उसे ठीक कर देता है), और उसका निमंत्रण मैत्रीपूर्ण नहीं था। इसे इस तथ्य से देखा जा सकता है कि शमौन ने उच्च सम्मान और सम्मान के पात्र अतिथि को पेश किए गए सभी इशारों को बेरुखी से छोड़ दिया।

इसलिए, प्रभु फरीसी के घर गए और मेज पर बैठ गए (लूका ७:३६बी), उस प्रथा के अनुसार जो बहुत पहले बेबीलोन की कैद के दिनों में फारस से लाई गई थी। ईसा मसीह के समय, यहूदियों के बीच मेज़ पर लेटने की प्रथा सार्वभौमिक रूप से प्रचलित थी। शमौन ने यीशु का सम्मान नहीं किया और उनके साथ वैसा व्यवहार नहीं किया जैसा उनकी संस्कृति में अपेक्षा की जाती है। हालाँकि यीशु कफरनहूम से मगदला तक धूल भरी चार मील की दूरी अपनी चप्पलों में चलकर तय कर चुके थे, लेकिन प्रथा के अनुसार, शमौन ने उन्हें अपने पैरों की धूल धोने के लिए पानी उपलब्ध नहीं कराया था। शमौन ने राजाओं के राजा के आगमन पर उसके गाल पर सम्मानजनक चुंबन नहीं दिया या जैतून के तेल से उसका अभिषेक नहीं किया।

उस शहर की एक महिला जो पापपूर्ण जीवन जी रही थी, अपने बाल खुले रखती थी (उसके पापपूर्ण पेशे का संकेत), उसे पता चला कि यीशु फरीसी के घर में खाना खा रहा था (लूका ७:३७ए)। पापिनी एक ऐसा शब्द था जिसका उपयोग फरीसियों ने वेश्याओं, चोरों और कम प्रतिष्ठा वाले अन्य लोगों के लिए करते थे जिनके पाप स्पष्ट और स्पष्ट थे, न कि उस तरह के जिसके साथ एक फरीसी जुड़ना चाहता था। आम तौर पर इस तरह की महिलाओं के लिए इतनी आसान पहुँच नहीं होती एक फरीसी के घर में. हालाँकि, यह वेश्या एक उदास, दुखी, प्रताड़ित आत्मा थी। इतने सारे राक्षसों द्वारा उसे पीड़ित करने के कारण, वह शायद इतनी विक्षिप्त हो गई होगी कि अधिकांश लोगों द्वारा उसे एक ऐसी पागल के रूप में माना जाने लगा होगा। उसके राक्षसों के कब्जे के कारण फरीसियों ने उसे एक पापी के रूप में देखा होगा। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे होंगे कि उसकी आध्यात्मिक स्थिति का कारण यह था कि वह एक वेश्या थी।

निःसंदेह, उसने गलील के भविष्यद्वक्ता के बारे में सुना था, जिसके बारे में बताया जाता है कि वह कर वसूलने वालों और पापियों का मित्र था। उसने शायद उसे सड़कों पर खुशखबरी का प्रचार करते हुए यह कहते हुए सुना होगा: हे सब थके हुए और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ। . . मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझ से सीखो,

क्योंकि मैं हृदय में नम्र और नम्र हूं, और तुम अपनी आत्मा में विश्राम पाओगे (मत्ती ११:२८-२९)। वह यह सब मानती थी। विश्वास के द्वारा स्वर्ग के राज्य के द्वार उसके लिए खोल दिए गए थे और उसे बचा लिया गया था (देखें Bw – विश्वास के क्षण में परमेश्वर हमारे लिए क्या करता है)। जब वह शमौन के निवास के बाहर झिझक रही थी तो वह अपनी अंतरात्मा से युद्ध कर रही थी। उसके पापी अतीत के राक्षसों ने उसे जीवन के प्रभु की ओर एक और कदम उठाने से रोकने की कोशिश की। लेकिन उसने उपहास सहने और किसी भी तरह उसके पास जाने का संकल्प लिया।

उसे पहुंच कैसे मिली? क्या वह नौकरों से मिली हुई थी? क्या वह कुछ चौकीदार को पार कर गई थी? इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। वह गुरु के पास जाने के लिए बाध्य और दृढ़ थी। लेकिन जब वह उसके पास पहुँचेगी तो वह क्या करेगी? किसी भी यहूदी पुरुष के लिए किसी महिला के साथ बातचीत करना सख्त मना था, चाहे उसका चरित्र कितना भी ऊंचा क्यों न हो। इसलिए उसने गैलीलियन रब्बी, जिन्हें बहुत से लोग ईश्वर द्वारा भेजा गया भविष्यद्वक्ता मानते थे, तक पहुंच की मांग में अपनी ओर से पूर्ण अनुपयुक्तता को पहचान लिया होगा। लेकिन, उसे अपनी आत्मा की मुक्ति के लिए आभार प्रकट करना था। उसने देखा था, और फरीसी के घर तक दूर तक उसका पीछा किया था।

इसलिए वह चुपचाप कमरे में दाखिल हुई और सिलखड़ी के पात्र में इत्र लेकर यीशु के पास आई (लूका ७:३७बी)। उसे पैसे कहाँ से मिले, हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं। लेकिन एक महिला अपनी शादी के लिए सिलखड़ी पात्र खरीदने के लिए वर्षों तक बचत करेगी। जिस “टेबल” पर उन्होंने खाना खाया वह ज़मीन से नीची थी। यीशु और अन्य फरीसियों ने बायीं ओर झुककर, बायीं कोहनी मेज पर रखकर, सिर बायीं खुली हथेली पर रखकर भोजन किया। उनके बीच पर्याप्त जगह थी ताकि प्रत्येक के पास दाहिने हाथ की मुक्त गतिविधियों के लिए पर्याप्त जगह हो। मिस्र के फसह के विपरीत (निर्गमन परमेरी टिप्पणी देखें – Bv – मिस्र का फसह), जहां वे जल्दबाजी में खाते थे, रब्बियों ने सिखाया कि चूंकि दासों का खड़े होकर खाना खाने का तरीका है, इसलिए, अब हम बैठकर और झुककर खाते हैं। यह दिखाने के लिए कि हमें बंधन से मुक्त कर स्वतंत्रता की ओर ले जाया गया है। परिणामस्वरूप, वह पीछे खड़ी हो गई, अर्थात येशुआ के चरणों में क्योंकि एक वेश्या के रूप में उसकी सामाजिक स्थिति एक दास की तुलना में थी।

वह भावुक होकर उनके चरणों में खड़ी होकर रोने
लगी। उसे इसकी परवाह नहीं थी कि वहाँ कौन था या वे क्या सोचते थे। उसका एक ही दर्शक था। तब वह उसके चरणों पर झुक गई और उन्हें अपने आंसुओं से गीला करने लगी। उसके आँसू स्वतंत्र रूप से और बिना शर्म के बहते हैं। उसका चेहरा यीशु के पैरों के करीब था, जो अभी भी सड़क की धूल से सने हुए थे। फिर उसने उसके पैरों को अपने बालों से पोंछा, प्यार और सम्मान की निशानी के रूप में उन्हें चूमा और उन पर इत्र डाला (लूका ७:३८)। इस इत्र के साथ एक फ्लास्क महिलाओं द्वारा गर्दन के चारों ओर पहना जाता था, और स्तन के नीचे लटकाया जाता था। गंध मनमोहक और शक्तिशाली थी, जो कमरे को अपनी फूलों की मिठास से भर रही थी। वह कुछ नहीं बोली, और उसकी चुप्पी सबसे उपयुक्त लग रही थी। येशुआ ने उसे रोकने का कोई प्रयास नहीं किया।

जब फरीसी ने, जिसने उसे आमंत्रित किया था, यह देखा और मन में सोचा, “यदि यह आदमी भविष्यवक्ता होता, मसीहा तो क्या, तो उसे पता चल जाता कि कौन उसे छू रहा है और वह किस प्रकार की स्त्री है – कि वह पापी है” (लूका) ७:३९). लेकिन अविश्वास के लिए कभी भी पर्याप्त सबूत नहीं होते। वास्तव में, यदि वह मात्र रब्बी या भविष्यवक्ता होता, तो संभवतः उसने उसे रोक दिया होता। लेकिन वह उससे भी बढ़कर था, वह पापियों का उद्धारकर्ता था।

यीशु ने उसे दो देनदारों का दृष्टांत सुनाकर उत्तर दिया। यीशु ने कहा, हे शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है। “मुझे बताओ, शिक्षक,” फरीसी ने सहजता से उत्तर दिया। तब यीशु ने एक कहानी सुनाई जो उस स्त्री के उसके साथ व्यवहार करने के तरीके और शमौन के उसके साथ व्यवहार करने के तरीके के बीच अंतर बताती थी। दो व्यक्तियों पर एक साहूकार का कर्ज़ बकाया था। एक ने उस पर पाँच सौ दीनार का कर्ज़ लिया, और दूसरे ने पचास। दोनों में से किसी के पास उसे वापस देने के लिए पैसे नहीं थे, इसलिए उसने दोनों का कर्ज माफ कर दिया। अब उनमें से कौन उसे अधिक प्यार करेगा? चूंकि हिब्रू या अरामी भाषा में कृतज्ञता दिखाने या धन्यवाद देने के लिए कोई विशिष्ट शब्द नहीं है, इसलिए प्यार, प्रशंसा, आशीर्वाद और महिमा जैसे शब्दों का इस्तेमाल धन्यवाद या कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए किया जाता था। शमौन ने दृष्टांत के एक मुख्य बिंदु के साथ उत्तर दिया, “मैं मान लो जिसका बड़ा कर्ज़ माफ किया गया” (लूका ७:४०-४३)। यीशु ने कहा, आपने सही निर्णय लिया है।

तब वह पहली बार उस स्त्री की ओर मुड़ा और शमौन से कहा, क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं आपके घर आया. तू ने मुझे पांव धोने के लिये जल न दिया, परन्तु उस ने मेरे पांव अपने आंसुओं से भिगोए, और अपने बालों से पोंछा। तू ने तो मुझे चूमा नहीं, परन्तु इस स्त्री ने जब से मैं भीतर आया हूं तब से मेरे पांव चूमना नहीं छोड़ा है। तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं डाला, परन्तु उस ने मेरे पांवोंपर इत्र डाला है। (लूका ७:४४-४६) यीशु ने कहा कि शमौन उसे तीन सामान्य शिष्टाचार देने में विफल रहा जो एक मेज़बान आम तौर पर घर में आमंत्रित होने पर एक अतिथि को देता है। सबसे पहले, शमौन ने यीशु को अपने धूल भरे पैर धोने के लिए कोई पानी उपलब्ध नहीं कराया। दूसरे, वह येशुआ को अभिवादन का वह चुंबन देने में विफल रहा जो मध्य पूर्व में प्रथागत था। तीसरी बात यह कि शमौन ने उसे सिर पर लगाने को तेल न दिया। इसके विपरीत, उसने अपने ऋण को पहचाना। उसने साधारण पानी से नहीं, बल्कि अपने आंसुओं से यीशु के पैर धोये। उसने उसके सिर को नहीं, बल्कि उसके पैरों को चूमा। और उसने महँगे इत्र से उसका अभिषेक किया, न कि केवल रोजमर्रा के जैतून के तेल से, जैसा कि अपेक्षित था। इस तरह उमड़ी श्रद्धा से पता चलता है कि वह अपने स्वामी से कितनी गहराई से प्रेम करती होगी।

शमौन से, मुख्य चरवाहे ने कहा: इस वजह से, मैं आपको बताता हूं कि उसके पाप – जो कई हैं – माफ कर दिए गए हैं, (ग्रीक: होति) इस कारण से वह बहुत प्यार करती थी। तब यीशु ने उसकी ओर फिरकर कहा, तेरे पाप क्षमा हुए। (लूका ७:४७-४८ सीजेबी) हम क्षमा किए गए शब्द को स्वीकृत शब्द से बदल सकते हैं और अनुच्छेद की अखंडता को बनाए रख सकते हैं। “जो थोड़ा स्वीकार करते हैं, वे थोड़ा प्यार करते हैं।” यदि हम सोचते हैं कि ईश्वर कठोर और अनुचित है, तो अनुमान लगाएँ कि हम दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करेंगे? कठोर और अनुचित ढंग से। लेकिन अगर हमें पता चले कि उसने हमें बिना शर्त प्यार से सराबोर कर दिया है, तो क्या इससे कोई फर्क पड़ेगा?

रब्बी शाऊल ऐसा कहेंगे! बदलाव के बारे में बात करें. वह एक बदमाश से एक टेडी बियर बन गया। शाऊल बी.सी. (ईसा मसीह से पहले) क्रोध से जल उठा। वह मसीहाई समुदाय को नष्ट करने के लिए निकला – घर-घर में घुसकर, उसने पुरुषों और महिलाओं दोनों को खींच लिया और उन्हें जेल में डालने के लिए सौंप दिया (प्रेरितों ८:३ सीजेबी)। लेकिन शाऊल एडी (डिस्कवरी के बाद) प्यार से लबालब था।

उस पर आरोप लगाने वालों ने उसे पीटा, उस पर पथराव किया, उसे जेल में डाल दिया और उसका मज़ाक उड़ाया। फिर भी, क्या आप एक उदाहरण ढूंढ सकते हैं जहां उसने तरह तरह से जवाब दिया हो? एक गुस्से का गुस्सा? एक गुस्से का विस्फोट? वह एक अलग आदमी था. उसका क्रोध दूर हो गया। उनका जुनून प्रबल था. उनकी भक्ति निर्विवाद थी. लेकिन अचानक फूटना अतीत की बात हो गई है। क्या फर्क पड़ा? रब्बी शाऊल ने यहोवा का सामना किया था

इस दावत में अन्य मेहमान शमौन की तरह फरीसी थे। जब उन्होंने मसीह की क्षमा की

घोषणा सुनी, तो उनकी प्रतिक्रिया फरीसियों की तरह ही थी, जब यीशु ने लकवे के मारे हुए व्यक्ति के पापों को क्षमा कर दिया था, और मन में सोचा, “वह ईशनिंदा कर रहा है! केवल परमेश्वर को छोड़ कर पापों को कौन क्षमा कर सकता है” (मत्ती ९:३बी; मरकुस २:७; लूका ५:२१बी)? तो यहाँ शमौन की मेज के चारों ओर फरीसी आपस में कानाफूसी करने लगे, “यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है” (लूका ७:४९)? यदि आज कुछ लोग मसीह के ईश्वर होने के दावे के बारे में भ्रमित हैं, तो शमौन के घर पर आए मेहमान इतने इच्छुक नहीं थे। उनकी प्रतिक्रिया ने संकेत दिया कि उनके बीच में जो है वह केवल मसीहा हो सकता है।

यीशु ने स्त्री से कहा: तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें बचा लिया है। . . शांति से जाओ (लूका ७:५०) महिला पुरुषों की क्रूर अंतर्दृष्टि और हृदयहीन आलोचनाओं को सहने के लिए निकली। लेकिन वह अपने दिल में शांति और येशुआ की प्रेमपूर्ण देखभाल के आश्वासन के साथ गई। उसके पैरों को अपने आँसुओं से भिगोना और उन्हें अपने बालों से पोंछना, उसका चूमना और उसके पैरों पर महँगा इत्र डालना उसे नहीं बचा सका। उसकी मुक्ति का साधन विस्वाश थी।

हमें खुद से पूछने की ज़रूरत है, “क्या मेरे ऐसे दोस्त हैं जो पापी हैं?” यदि मेरे केवल मित्र ही आस्तिक हैं, तो यह मेरे बारे में क्या कहता है? केवल अविश्वासियों के साथ रहना पुरुषों और महिलाओं के मछुआरे बनने का पहला कदम है (देखें Cj – आओ, मेरे पीछे आओ, और मैं तुम्हें पुरुषों का मछुआरा बनाऊंगा)। फिर प्यार आता है – एक हृदय-दयालुता जो उनकी अभद्र टिप्पणियों की सतह के नीचे देखती है और आत्मा की गहरी पुकार को सुनती है। इसमें पूछा गया है, “क्या आप मुझे इसके बारे में और बता सकते हैं?” और करुणा के साथ पालन करता है। इस मित्रता में बहुत कुछ उपदेश है। ऐसा प्रेम कोई स्वाभाविक प्रवृत्ति नहीं है। यह पूरी तरह से ईश्वर से आता है.

प्रभु, जब मैं आज अविश्वासियों के साथ हूं, तो क्या मैं उस उदास आवाज, थके हुए चेहरे, या झुकी हुई आंखों से अवगत हो सकता हूं, जिन्हें मैं, अपनी स्वाभाविक आत्म-व्यस्तता में, आसानी से नजरअंदाज कर सकता हूं। क्या मुझे ऐसा प्यार मिल सकता है जो आपके प्यार से उपजा हो और उसमें निहित हो। क्या मैं आज दूसरों की बात सुन सकता हूँ, आपकी करुणा दिखा सकता हूँ और आपकी सच्चाई बोल सकता हूँ।